The Research Dialouge
An Online Quarterly Multi Disciplinary
Peer-Reviewed International Research Journal
ISSN: (Online)
Volume-1, Issue-1, April 2022
www.theresearchdialogue.com
RESEARCH PAPER

दिव्यांग विद्यार्थियों के व्यावसायिक सशक्तिकरण में डिजिटल तकनीकी के प्रभाव का अध्ययन

जितेन्द्र कुमार*
(शोधार्थी)
शिक्षक शिक्षा विभाग,हिन्दू कॉलेज, मुरादाबाद।

डॉ0 जितेन्द्र कुमार सिंह**
(सहायक प्रोफेसर)
शिक्षक शिक्षा विभाग, हिन्दू कॉलेज, मुरादाबाद।

सारांश

वर्तमान युग में डिजिटल तकनीकी ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन किए हैं, और शिक्षा व रोजगार क्षेत्र भी इससे अछूते नहीं रहे हैं। विशेष रूप से दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए डिजिटल तकनीकी ने अनेक संभावनाओं के द्वार खोल दिए हैं, जिससे उनका व्यावसायिक सशक्तिकरण संभव हुआ है। पहले जहां दिव्यांग छात्रों को पारंपरिक शिक्षण विधियों में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था, वहीं अब तकनीकी साधनों के माध्यम से वे अपनी शैक्षिक योग्यताओं को न केवल बेहतर बना रहे हैं, बल्कि व्यावसायिक क्षेत्रों में भी सफलतापूर्वक भागीदारी निभा रहे हैं।

डिजिटल तकनीकी जैसे स्क्रीन रीडर, वॉयस रिकग्निशन सॉफ्टवेयर, ब्रेल डिस्प्ले, स्पीच–टू–टेक्स्ट एप्लिकेशन, ऑगमेंटेटिव कम्युनिकेशन डिवाइसेज आदि ने दिव्यांग विद्यार्थियों को अपनी क्षमताओं के अनुरूप शिक्षा प्राप्त करने और रोजगार पाने में सहायता दी है। ऑनलाइन शिक्षा, ई–लर्निंग प्लेटफॉर्म्स तथा वर्चुअल कक्षाओं ने उन छात्रों के लिए नई राहें खोली हैं जो शारीरिक रूप से विद्यालय या कॉलेज जाने में असमर्थ होते हैं। इससे उनमें आत्मविश्वास का विकास हुआ है और वे अपनी योग्यता के अनुसार विविध क्षेत्रों में कार्य करने लगे हैं।

इसके साथ ही डिजिटल तकनीकी ने दिव्यांग छात्रों के लिए कौशल विकास के अवसर भी बढ़ा दिए हैं। कोडिंग, ग्राफिक डिजाइनिंग, डिजिटल मार्केटिंग, कंटेंट राइटिंग जैसे अनेक डिजिटल स्किल्स को वे घर बैठे सीख सकते हैं, जिससे उन्हें स्वरोजगार या दूरस्थ कार्य के लिए तैयार किया जा सकता है। इससे न केवल उनकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होती है, बल्कि समाज में उन्हें एक आत्मनिर्भर और सम्मानजनक स्थान भी प्राप्त होता है।

हालांकि, इन सबके बावजूद कुछ चुनौतियाँ भी सामने आती हैं। तकनीकी साधनों की पहुँच, प्रशिक्षण की कमी, आर्थिक संसाधनों की सीमाएं तथा समाज में व्याप्त भेदभाव जैसी समस्याएं अभी भी दिव्यांग विद्यार्थियों के व्यावसायिक सशक्तिकरण में बाधा बनती हैं। इसके समाधान हेतु सरकार, शैक्षणिक संस्थानों तथा निजी क्षेत्र को मिलकर ठोस प्रयास करने की आवश्यकता है, जैसे सब्सिडी पर डिजिटल उपकरण प्रदान करना, विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करना और समावेशी नीति निर्माण करना।

अंततः यह कहा जा सकता है कि डिजिटल तकनीकी ने दिव्यांग विद्यार्थियों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाने की दिशा में एक सशक्त माध्यम के रूप में कार्य किया है। यह तकनीकी उन्हें न केवल शिक्षित और दक्ष बना रही है, बल्कि उनके व्यावसायिक भविष्य को भी सुरक्षित बना रही है। यदि इस दिशा में निरंतर प्रयास किए जाएं तो समान अवसर और समावेशी विकास का सपना साकार किया जा सकता है।

मुख्यशब्द : दिव्यांग विद्यार्थी, व्यावसायिक सशक्तिकरण एवं डिजिटल तकनीकी

प्रस्तावना

वर्तमान युग को डिजिटल क्रांति का युग कहा जाता है। सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के तीव्र विकास ने समाज के प्रत्येक वर्ग को प्रभावित किया है और विशेषकर शिक्षा तथा व्यावसायिक क्षेत्र में तो इसका प्रभाव व्यापक रूप से देखा जा सकता है। इस तकनीकी क्रांति ने जहां एक ओर आम लोगों के लिए अवसरों के नए द्वार खोले हैं, वहीं दूसरी ओर यह दिव्यांग (विकलांग) व्यक्तियों के जीवन में भी परिवर्तनकारी भूमिका निभा रही है। विशेष रूप से, दिव्यांग विद्यार्थियों के व्यावसायिक सशक्तिकरण में डिजिटल तकनीकी की भूमिका उल्लेखनीय हो गई है। यह तकनीकी न केवल उन्हें शिक्षा प्राप्त करने के नए साधन प्रदान करती है, बल्कि उनके आत्मनिर्भर बनने की दिशा में भी महत्वपूर्ण सहायता करती है।

व्यावसायिक सशक्तिकरण का आशय उस प्रक्रिया से है जिसके माध्यम से कोई व्यक्ति अपनी योग्यता, दक्षता और आत्मविश्वास के बल पर अपने जीवन को बेहतर बनाने के लिए उपयुक्त व्यावसायिक अवसरों को प्राप्त कर सके। दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए यह प्रक्रिया विशेष रूप से चुनौतीपूर्ण होती है क्योंकि उन्हें शारीरिक, मानसिक और सामाजिक स्तर पर अनेक प्रकार की बाधाओं का सामना करना पड़ता है। इन चुनौतियों में उपयुक्त शैक्षणिक संसाधनों की कमी, सामाजिक पूर्वाग्रह, रोजगार में भेदभाव, तथा व्यावसायिक प्रशिक्षण की सीमित पहुंच शामिल हैं। परंतु डिजिटल तकनीक ने इन बाधाओं को काफी हद तक कम करने की संभावना प्रस्तुत की है।

डिजिटल तकनीक जैसे कि इंटरनेट, मोबाइल एप्लिकेशन, ई–लर्निंग प्लेटफॉर्म, वर्चुअल रियलिटी, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस तथा सहायक तकनीक के माध्यम से दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए शिक्षा और व्यावसायिक

प्रशिक्षण को अधिक सुलभ, अनुकूल और प्रभावशाली बनाया जा सकता है। उदाहरण के लिए, दृष्टिहीन विद्यार्थियों के लिए स्क्रीन रीडर सॉफ्टवेयर, श्रवण बाधितों के लिए सबटाइटल युक्त वीडियो कंटेंट, तथा गतिशीलता में बाधित विद्यार्थियों के लिए वॉयस कमांड सिस्टम जैसे तकनीकी उपकरण उनके अध्ययन को सहज बनाते हैं।

इन तकनीकों के माध्यम से दिव्यांग विद्यार्थियों को न केवल अकादमिक ज्ञान प्राप्त होता है, बल्कि वे विभिन्न प्रकार के व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भी भाग ले सकते हैं, जैसे कि कंप्यूटर प्रोग्रामिंग, ग्राफिक डिजाइनिंग, डिजिटल मार्केटिंग, कंटेंट राइटिंग, डाटा एंट्री, ट्रांसक्रिप्शन आदि। इस प्रकार वे भविष्य में स्वतंत्र रूप से कार्य करने में सक्षम हो सकते हैं और अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बना सकते हैं। डिजिटल तकनीक ने वर्क फ्रॉम होम और फ्रीलांसिंग जैसे रोजगार के नए विकल्पों को भी सुलभ बनाया है, जो दिव्यांगों के लिए विशेष रूप से उपयुक्त हैं।

आज भारत सरकार एवं विभिन्न राज्य सरकारें भी दिव्यांग व्यक्तियों के डिजिटल समावेशन के लिए विभिन्न योजनाएं चला रही हैं। जैसे दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग द्वारा डिजिटल साक्षरता कार्यक्रम, स्किल इंडिया मिशन के अंतर्गत विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम, तथा डिजिटल इंडिया अभियान के माध्यम से दिव्यांगों को डिजिटल संसाधनों से जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त अनेक गैर–सरकारी संगठन एवं निजी संस्थाएं भी डिजिटल सशक्तिकरण की दिशा में कार्य कर रही हैं।

हालांकि इन सभी प्रयासों के बावजूद, अभी भी अनेक चुनौतियाँ बनी हुई हैं। जैसे – ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट की सीमित पहुंच, आर्थिक तंगी के कारण डिजिटल उपकरणों की उपलब्धता में कठिनाई, डिजिटल साक्षरता की कमी, और शिक्षकों या प्रशिक्षकों द्वारा उपयुक्त तकनीकी दृष्टिकोण का अभाव। इसके साथ ही कई बार दिव्यांग विद्यार्थियों को अपने परिवार और समाज से भी अपेक्षित सहयोग नहीं मिल पाता, जिससे उनकी व्यावसायिक संभावनाएं सीमित हो जाती हैं।

इन समस्याओं से निपटने के लिए आवश्यक है कि डिजिटल तकनीक को दिव्यांग विद्यार्थियों की आवश्यकताओं के अनुरूप विशेष रूप से अनुकूलित किया जाए। इसके लिए पाठ्यक्रम, अध्ययन सामग्री, प्रशिक्षण विधियाँ, तथा मूल्यांकन प्रणाली को समावेशी बनाया जाना चाहिए। शिक्षकों को डिजिटल शिक्षण के विशेष कौशल प्रदान किए जाएँ तथा दिव्यांगों के लिए विशेष परामर्श एवं सहायता तंत्र विकसित किया जाए। इसके अलावा, नीतिगत स्तर पर भी ऐसी योजनाएं बनाई जानी चाहिए जो दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए विशेष डिजिटल प्रावधान सुनिश्चित करें।

महत्वपूर्ण यह भी है कि दिव्यांग विद्यार्थियों को केवल लाभार्थी नहीं, बल्कि तकनीकी विकास में सहभागी के रूप में भी देखा जाए। उन्हें डिजिटल प्रौद्योगिकी के उपयोगकर्ता के साथ–साथ उसके निर्माता बनने के लिए भी प्रेरित किया जाना चाहिए। इस दिशा में कुछ प्रेरणादायी उदाहरण भी सामने आए हैं, जैसे कि दृष्टिबाधित सॉफ्टवेयर डेवलपर्स, व्हीलचेयर–बाउंड यूट्यूब कंटेंट क्रिएटर्स, या मूक–बधिर डिजिटल डिजाइनर जो अपने कौशल के दम पर समाज में स्थान बना रहे हैं।

नवाचार और अनुकूलन की दिशा में भी कार्य किया जाना चाहिए ताकि विभिन्न प्रकार की दिव्यांगताओं के लिए उपयुक्त तकनीकी उपकरण और एप्लिकेशन विकसित किए जा सकें। इसके लिए तकनीकी विशेषज्ञों, शिक्षाविदों, मनोवैज्ञानिकों, सामाजिक कार्यकर्ताओं और दिव्यांग व्यक्तियों के मध्य सहयोगात्मक प्रयास आवश्यक है।

साथ ही, समाज में दिव्यांगता के प्रति संवेदनशीलता और समावेशन की भावना को बढ़ावा देना भी आवश्यक है। जब समाज में यह समझ बढ़ेगी कि दिव्यांग व्यक्ति भी समान रूप से प्रतिभाशाली, सक्षम और योगदान देने में समर्थ हैं, तब डिजिटल तकनीक द्वारा उन्हें दिए गए अवसरों का वास्तविक लाभ दिखाई देगा। इस प्रकार तकनीक केवल एक उपकरण नहीं, बल्कि सामाजिक बदलाव और समावेश का माध्यम बन सकेगी।

अंततः, यह कहा जा सकता है कि डिजिटल तकनीकी ने दिव्यांग विद्यार्थियों के व्यावसायिक सशक्तिकरण के क्षेत्र में नए आयाम जोड़े हैं। यह उन्हें मुख्यधारा में शामिल करने, आत्मनिर्भर बनाने, और सम्मानजनक जीवन जीने के लिए एक सशक्त मंच प्रदान करती है। परंतु इसके लिए जरूरी है कि तकनीकी विकास समावेशी, न्यायसंगत और दिव्यांगों की विशेष आवश्यकताओं के अनुरूप हो। तभी हम एक ऐसे समाज की ओर अग्रसर हो सकेंगे जो समावेशी, समानता पर आधारित और सशक्त हो।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्त्व

समाज के समग्र विकास के लिए यह आवश्यक है कि हर व्यक्ति को समान अवसर प्रदान किए जाएँ, चाहे वह किसी भी सामाजिक, आर्थिक या शारीरिक पृष्ठभूमि से संबंधित हो। दिव्यांग व्यक्ति, विशेषकर विद्यार्थी वर्ग, समाज के उस वर्ग का हिस्सा हैं जिन्हें विशेष सहयोग, संसाधन और अवसरों की आवश्यकता होती है ताकि वे भी समाज की मुख्यधारा में सम्मिलित हो सकें। व्यावसायिक सशक्तिकरण के संदर्भ में जब हम दिव्यांग विद्यार्थियों की बात करते हैं, तो यह केवल उनके रोजगार की बात नहीं होती, बल्कि उनकी आत्मनिर्भरता, आत्मविश्वास, सामाजिक सम्मान और जीवन की गुणवत्ता से भी जुड़ा होता है। डिजिटल तकनीकी ने इस दिशा में एक क्रांतिकारी परिवर्तन की शुरुआत की है, और यह आवश्यक हो गया है कि हम इसके प्रभाव को समझें, मूल्यांकन करें और इसका अधिकतम लाभ दिव्यांग विद्यार्थियों तक पहुँचाने के प्रयास करें।

दिव्यांग विद्यार्थियों के व्यावसायिक सशक्तिकरण में डिजिटल तकनीकी की आवश्यकता इसलिए भी है क्योंकि पारंपरिक शिक्षा पद्धतियाँ अक्सर उनकी विशेष आवश्यकताओं की पूर्ति करने में असमर्थ रहती हैं। नेत्रहीन, श्रवण बाधित, शारीरिक रूप से अक्षम या मानसिक रूप से कमजोर विद्यार्थी अक्सर शैक्षिक और व्यावसायिक संसाधनों तक समान रूप से पहुँच नहीं बना पाते। इस असमानता को पाटने के लिए डिजिटल तकनीकी एक प्रभावी माध्यम बन सकती है। स्क्रीन रीडर, स्पीच–टू–टेक्स्ट सॉफ्टवेयर, ब्रेल डिस्प्ले, वीडियो सबटाइटलिंग, वॉयस कमांड आधारित उपकरण, और अनुकूलित शैक्षिक एप्लिकेशन जैसी तकनीकें दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए एक समावेशी, लचीला और सहज ज्ञान का वातावरण प्रदान करती हैं।

आज के डिजिटल युग में व्यावसायिक प्रशिक्षण केवल कक्षा तक सीमित नहीं रह गया है। ऑनलाइन कोर्स, वेबिनार, वीडियो ट्यूटोरियल, ई–लर्निंग प्लेटफॉर्म और वर्चुअल लैब जैसे डिजिटल संसाधन दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए एक नई दुनिया के द्वार खोलते हैं। उन्हें अपने सुविधानुसार सीखने का अवसर मिलता है, साथ ही वे अपने कौशल को समय के साथ अद्यतन कर सकते हैं। इससे न केवल उनकी शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार आता है, बल्कि वे व्यावसायिक दृष्टिकोण से भी प्रतिस्पर्धा में बने रहते हैं।

इसके अतिरिक्त, डिजिटल तकनीकी ने दूरस्थ कार्य, फ्रीलांसिंग और ऑनलाइन रोजगार के ऐसे रास्ते खोल दिए हैं, जिनमें दिव्यांग व्यक्ति अपनी सीमाओं को पार करते हुए काम कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, एक व्हीलचेयर पर आश्रित विद्यार्थी किसी आईटी कंपनी में ऑनलाइन प्रोग्रामिंग का कार्य कर सकता है या एक श्रवण

बाधित विद्यार्थी ग्राफिक डिजाइनिंग या वेब डेवलपमेंट जैसे क्षेत्र में सफलतापूर्वक करियर बना सकता है। इन सभी संभावनाओं के मूल में डिजिटल तकनीकी की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

व्यावसायिक सशक्तिकरण में आत्मनिर्भरता की भावना विशेष स्थान रखती है। जब दिव्यांग विद्यार्थी डिजिटल उपकरणों का उपयोग करके किसी तकनीकी कोर्स में दक्षता प्राप्त करता है, तो उसमें आत्मविश्वास का संचार होता है। वह अपनी क्षमताओं को पहचानता है और यह अनुभव करता है कि उसकी योग्यता समाज के अन्य लोगों से किसी भी प्रकार कम नहीं है। यह अनुभव उसे समाज में सम्मान प्राप्त करने और एक सम्मानजनक जीवन जीने की दिशा में प्रेरित करता है।

शिक्षा संस्थानों में डिजिटल तकनीकी के माध्यम से समावेशी शिक्षण विधियाँ लागू करना भी इस दिशा में एक आवश्यक कदम है। विशेष आवश्यकताओं वाले विद्यार्थियों के लिए अनुकूल पाठ्यक्रम, ई–लर्निंग मटेरियल और इंटरएक्टिव प्लेटफॉर्म उन्हें उस वातावरण में शिक्षा प्रदान करते हैं जहाँ वे सहज अनुभव करते हैं। इससे उनके ड्रॉपआउट रेट में कमी आती है और वे उच्च शिक्षा तक पहुँच बना पाते हैं, जो आगे चलकर उनके व्यावसायिक जीवन को संवारता है।

भारत सरकार और अन्य सामाजिक संस्थाओं द्वारा चलाई जा रही योजनाएँ जैसे दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग, सुगम्य भारत अभियान, डिजिटल इंडिया मिशन तथा स्किल इंडिया मिशन के माध्यम से डिजिटल तकनीकी और व्यावसायिक प्रशिक्षण को जोड़ने के प्रयास हो रहे हैं। इसके अंतर्गत विशेष रूप से दिव्यांग व्यक्तियों के लिए ई–लर्निंग कोर्स, आईटी स्किल ट्रेनिंग, अनुकूल तकनीकी उपकरण और डिजिटल साक्षरता कार्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं। ये पहलें दिव्यांग विद्यार्थियों को मुख्यधारा से जोड़ने के लिए अत्यंत आवश्यक हैं।

हालांकि, यह स्वीकार करना भी आवश्यक है कि अभी भी डिजिटल तकनीकी तक पहुँच, जागरूकता की कमी, इंटरनेट कनेक्टिविटी, उपकरणों की महँगाई और प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी जैसी चुनौतियाँ मौजूद हैं। यदि हम वास्तव में दिव्यांग विद्यार्थियों के व्यावसायिक सशक्तिकरण में डिजिटल तकनीकी का प्रभावी उपयोग करना चाहते हैं, तो इन चुनौतियों का समाधान भी हमें समानांतर रूप से करना होगा।

समाज के हर वर्ग को डिजिटल समावेशन के माध्यम से समान अवसर देना केवल एक सामाजिक दायित्व नहीं, बल्कि यह एक नैतिक उत्तरदायित्व भी है। जब दिव्यांग विद्यार्थी डिजिटल माध्यम से शिक्षा प्राप्त कर व्यावसायिक रूप से सक्षम बनता है, तो वह न केवल अपनी आजीविका कमाता है बल्कि समाज के लिए भी योगदान देता है। इससे समाज की समृद्धि में वृद्धि होती है और सामाजिक समरसता को बल मिलता है।

अंततः यह कहा जा सकता है कि डिजिटल तकनीकी दिव्यांग विद्यार्थियों के व्यावसायिक सशक्तिकरण की दिशा में एक क्रांतिकारी शक्ति बनकर उभरी है। इसकी आवश्यकता इसलिए है क्योंकि यह उन्हें उन संसाधनों तक पहुँच देती है, जो पहले उनके लिए सीमित या अनुपलब्ध थे। और इसका महत्त्व इसलिए है क्योंकि यह उन्हें आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी और समाज के लिए उपयोगी नागरिक बनने का अवसर देती है। यदि नीतिगत, सामाजिक और शैक्षिक स्तर पर समुचित कदम उठाए जाएँ, तो डिजिटल तकनीकी के माध्यम से दिव्यांग विद्यार्थियों के व्यावसायिक जीवन को नई ऊँचाइयाँ दी जा सकती हैं, जो समावेशी और सशक्त भारत की दिशा में एक सशक्त कदम होगा।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

- विनोद कुमार साहू. (2023) ने उच्च शिक्षा पर डिजिटल तकनीक के प्रभाव पर अध्ययन किया। शोध निष्कर्ष : आजादी के बाद से हमारे देश में तकनीकी शिक्षा प्रणाली काफी बडे आकार की प्रणाली के रूप में उभरी है। जिसके कारण हमारा जीवन आसान बन गया है। यह तकनीक हमें इतनी सुख–सुविधाएँ प्रदान की है जिसके बारे में हम कल्पना भी नही कर सकते थे। तकनीक से न सिर्फ मनुष्य का जीवन स्तर सुधरा है, बल्कि देश दुनिया के विकास के क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव आए है। डिजिटल तकनीक नें सीखनें के कई रास्ते खोल दिए है।
- नेहा वर्मा एवं रमा शंकर (2023) ने शैक्षिक तकनीकी के माध्यम से शिक्षण और अधिगमः लाभ व चुनौतियाँ पर अध्ययन किया। शोध निष्कर्ष : कोविड–19 जैसी महामारी के आने के बाद शिक्षा के क्षेत्र में काफी परिवर्तन आया है। इस महामारी में जब कक्षाओं का संचालन पारंपरिक तरीके से नहीं हो पा रहा था तब ऑनलाइन माध्यमों का प्रयोग करके शिक्षा का संचालन किया गया था। कई शोधकर्ताओं द्वारा यह भी सिद्ध किया गया है कि तकनीकी के माध्यम से शिक्षण और अधिगम काफी रूचिपूर्वक होता है। जहाँ पारंपरिक माध्यम से बच्चों के लिए सीखना बोझ बन जाता है वहीं नई–नई तकनीकों से सीखना काफी सरल हो जाता है।
- मिश्रा, लक्ष्मी (2023) ने डिजिटल शिक्षा : आवश्यकता, संभावनाएं एवं चुनौतियाँ पर एक अध्ययन किया। शोध निष्कर्ष : राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने भी डिजिटल शिक्षा तथा प्रौद्यौगिकी पर अपना ध्यान केंद्रित किया है, लेकिन फिर भी डिजिटल शिक्षा कहीं–कहीं पर एक चुनौती के रूप में भी उभरकर सामने आई है। प्रस्तुत शोधपत्र भारत के वर्तमान समय की डिजिटल शिक्षा की आवश्यकता, संभावना व चुनौतियों पर प्रकाश डालता है।
- जनसत्ता (2019, जून 12) ने दिव्यांगों के विकास के लिए तकनीकी प्रगति बेहद जरूरी, महिलाओं के लिए चुनौतियां पर अध्ययन किया। शोध निष्कर्षः दिव्यांग अब संस्थानों में अपनी भौतिक उपस्थिति के बिना शैक्षिक पाठ्यक्रमों को ऑनलाइन पूरा कर सकते हैं। ये पाठ्यक्रम सभी क्षेत्रों में सम्मानजनक कंपनियों में नौकरी हासिल करके उन्हें पेशेवर कैरियर के लिए तैयार करने में मदद करते हैं। सरल डिजिटल पाठ्यक्रम आर्थिक पुनर्वास में उनकी मदद कर सकते हैं। पर्सनल फाइनेंस, कॉर्पोरेट फाइनेंस, प्रबंधन लेखा, वित्तीय जोखिम प्रबंधन, धन प्रबंधन, डिजिटल फोटोग्राफी, ग्राफिक डिजाइन, मोबाइल ऐप डेवलपमेंट, साइबर सुरक्षा आदि कोर्स किए जा सकते हैं। इन ऑनलाइन पाठ्यक्रमों के साथ, कोई व्यक्ति बुनियादी जरूरतों को ध्यान में रखते हुए अपने लिए कोई विशेष नौकरी हासिल कर सकता है।
- प्रेस सूचना ब्यूरो. (2024) ने शिक्षा में डिजिटल प्रौद्योगिकी और डिजिटल साक्षरता की अनिवार्यता पर अध्ययन किया। शोध निष्कर्ष : प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ईसीसीई) परिदृश्य को मजबूत बनाने के लिए सरकार ने अप्रैल 2024 में ईसीसीई के लिए राष्ट्रीय पाठ्यक्रम, आधारशिला और प्रारंभिक बाल्यावस्था प्रोत्साहन के लिए राष्ट्रीय रूपरेखा, नवचेतना आरंभ की। नवचेतना जन्म से तीन साल तक की आयु के बच्चों के समग्र विकास पर ध्यान केन्द्रित करती है, जो 36 महीने के प्रोत्साहन कैलेंडर के जरिए 140 आयु–विशिष्ट गतिविधियों की पेशकश करती है। आधारशिला 3 से 6 साल तक की आयु के बच्चों के लिए शिशु केन्द्रित और शिक्षक

केन्द्रित शिक्षा का समर्थन करते हुए 130 से अधिक गतिविधियों के साथ खेल आधारित अधिगम को बढ़ावा देती है।

समस्या कथन

दिव्यांग विद्यार्थियों के व्यावसायिक सशक्तिकरण में डिजिटल तकनीकी के प्रभाव का अध्ययन।

चरों का परिभाषीकरण

- **दिव्यांग विद्यार्थी :–** ऐसे छात्र होते हैं जिन्हें शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, संवेदी या व्यवहारिक विकास में किसी प्रकार की विशेष आवश्यकता होती है। ये विद्यार्थी सामान्य शिक्षा पद्धति में भाग तो लेते हैं, लेकिन उन्हें सीखने और सामाजिक सहभागिता में अतिरिक्त सहायता, संसाधन और अनुकूल वातावरण की आवश्यकता होती है। प्रस्तुत शोध प्रपत्र में माध्यमिक स्तर के शारीरिक रुप से दिव्यांग विद्यार्थियों को लिया गया है।
- **व्यावसायिक सशक्तिकरण :–** व्यावसायिक सशक्तिकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्तियों को उनके कार्यस्थल पर निर्णय लेने की शक्ति, संसाधनों तक पहुँच, प्रशिक्षण, अवसरों और आत्मविश्वास से लैस किया जाता है ताकि वे अपने कार्यों में अधिक प्रभावी एवं उत्तरदायी बन सकें।
- **डिजीटल तकनीकी :–** डिजिटल तकनीकी से तात्पर्य उन तकनीकों से है जो सूचना को डिजिटल रूप में (यानि बाइनरी कोड – 0 और 1 के रूप में) संसाधित, संग्रहित, और प्रसारित करती हैं। इसमें कंप्यूटर, स्मार्टफोन, इंटरनेट, सॉफ्टवेयर, एप्लिकेशन, मल्टीमीडिया उपकरण, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और विभिन्न इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस शामिल होते हैं। सरल शब्दों में – डिजिटल तकनीकी वह तकनीक है जो इलेक्ट्रॉनिक साधनों द्वारा सूचनाओं के निर्माण, संग्रहण, संप्रेषण और विश्लेषण में मदद करती है। शिक्षा के क्षेत्र में, डिजिटल तकनीकी का उपयोग शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया को अधिक प्रभावी, सुलभ और व्यक्तिगत बनाने के लिए किया जाता है। जैसे कि – ई–लर्निंग प्लेटफॉर्म, ऑनलाइन कक्षाएँ, ऑडियो–विजुअल सामग्री, और सहायक तकनीक आदि।

अध्ययन के उद्देश्य

- दिव्यांग छात्रों के व्यावसायिक सशक्तिकरण में डिजिटल तकनीकी के प्रभाव का अध्ययन।
- दिव्यांग छात्राओं के व्यावसायिक सशक्तिकरण में डिजिटल तकनीकी के प्रभाव का अध्ययन।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ

- दिव्यांग छात्रों के व्यावसायिक सशक्तिकरण एवं डिजिटल तकनीकी के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध हैं।
- दिव्यांग छात्राओं के व्यावसायिक सशक्तिकरण एवं डिजिटल तकनीकी के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध हैं।

आँकड़ों का संग्रह

प्रस्तुत शोध हेतु आँकड़ों के संकलन के लिए रामपुर जनपद के यू0पी0 बोर्ड द्वारा संचालित कक्षा 09 से 12 तक के माध्यमिक विद्यालयों के सामान्य एवं दिव्यांग विद्यार्थियों से व्यक्तिगत सम्पर्क करके प्रश्नावली के माध्यम से आँकड़ों का संकलन किया गया।

न्यादर्श

वर्तमान शोध हेतु माध्यमिक विद्यालयों के 50 दिव्यांग विद्यार्थियों को शामिल किया गया है।

उपकरण

व्यावसायिक सशक्तिकरण मापनी – स्वनिर्मित प्रश्नावली।

डिजिटल तकनीकी मापनी – स्वनिर्मित प्रश्नावली।

परिकल्पनाओं का विश्लेषण एवं व्याख्या

तालिका संख्या – 1

दिव्यांग छात्रों के व्यावसायिक सशक्तिकरण एवं डिजिटल तकनीकी के मध्य सहसम्बन्ध का विश्लेषण एवं व्याख्या

स्मूह	संख्या	सहसम्बन्ध	सार्थकता स्तर
दिव्यांग छात्र	25	0.588	धनात्मक

व्याख्या :– तालिका संख्या 1 में दिव्यांग छात्रों के व्यावसायिक सशक्तिकरण एवं डिजिटल तकनीकी के मध्य सहसम्बन्ध को दर्शाया गया है। दोनों के मध्य सहसम्बन्ध का मान 0.588 प्राप्त हुआ है। प्राप्त मान दोनों के बीच धनात्मक सहसम्बन्ध को प्रदर्शित करता है। जिससे सिद्ध होता है कि दिव्यांग छात्रों के व्यावसायिक सशक्तिकरण एवं डिजिटल तकनीकी के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध पाया जाता है।

तालिका संख्या – 2

दिव्यांग छात्राओं के व्यावसायिक सशक्तिकरण एवं डिजिटल तकनीकी के मध्य सहसम्बन्ध का विश्लेषण एवं व्याख्या

समूह	संख्या	सहसम्बन्ध	सार्थकता स्तर
दिव्यांग छात्राऐं	25	0.691	धनात्मक

व्याख्या :– तालिका संख्या 2 में दिव्यांग छात्राओं के व्यावसायिक सशक्तिकरण एवं डिजिटल तकनीकी के मध्य सहसम्बन्ध को दर्शाया गया है। दोनों के मध्य सहसम्बन्ध का मान 0.691 प्राप्त हुआ है। प्राप्त मान दोनों के बीच धनात्मक सहसम्बन्ध को प्रदर्शित करता है। जिससे सिद्ध होता है कि दिव्यांग छात्राओं के व्यावसायिक सशक्तिकरण एवं डिजिटल तकनीकी के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध पाया जाता है।

शोध अध्ययन के निष्कर्ष

- दिव्यांग छात्रों के व्यावसायिक सशक्तिकरण एवं डिजिटल तकनीकी के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।
- दिव्यांग छात्राओं के व्यावसायिक सशक्तिकरण एवं डिजिटल तकनीकी के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- डॉ. विनोद कुमार साहू. (2023). उच्च शिक्षा पर डिजिटल तकनीक के प्रभाव का अध्ययन. *Idealistic Journal of Advanced Research in Progressive Spectrums (IJARPS)*, 2(2), 13–18.
- नेहा वर्मा, डॉ. रमा शंकर. (2023). शैक्षिक तकनीकी के माध्यम से शिक्षण और अधिगम : लाभ व चुनौतियाँ. *Idealistic Journal of Advanced Research in Progressive Spectrums (IJARPS)*, 2(10), 221–224.

- मिश्रा, लक्ष्मी. (2023). डिजिटल शिक्षा : आवश्यकता, संभावनाएं एवं चुनौतियाँ. *International Journal of Novel Research and Development (IJNRD)*.
- जनसत्ता. (2019, जून 12). दिव्यांगों के विकास के लिए तकनीकी प्रगति बेहद जरूरी, महिलाओं के लिए चुनौतियां. https://www.jansatta.com/rajya/technical-support-is-must-to-help-divyangs-to-progress-with-mainstream-development/1049470/Jansatta
- प्रेस सूचना ब्यूरो. (2024). अंतर को पाटना : शिक्षा में डिजिटल प्रौद्योगिकी और डिजिटल साक्षरता की अनिवार्यता https://pib.gov.in/PressReleaseIframePage.aspx? PRID=2097867 Press Information Bureau